कहानी अच्छी हो तो पसंद आती है: सांघी

जाने माने लेखक अश्विन सांघी ने कहा कि कहानी अच्छी हो तो बिकती है। वह किसी वर्ग को ध्यान में रखकर या बेचने के हिसाब से कहानी नहीं लिखते। कहानी से जुड़े लोग खुद इसे ढूंढ लेते हैं। ताज लिटरेचर फेस्टिवल में शामिल कृष्ण कुंजी, द रोजाबेल लाइन, चाणक्याज चैंट जैसी चर्चित पुस्तकों के लेखक अश्विन सांघी ने कहा कि अंग्रेजी साहित्य की पुस्तकों के हिंदी अनुवाद से कहानी के मूल पर प्रभाव पड़ता है। हिंदी साहित्य के गिरते ग्राफ पर कहा कि लेखकों को ट्रेनिंग की जरूरत है। किसी भी लेखक को अपने प्रति सच्चा होना जरूरी है।

व्यावसायिक दृष्टि से लिखने पर प्रभावित होगी कहानी

आगरा : लेखक को व्यावसायिक दृष्टि से नहीं लिखना चाहिए। अगर वह व्यावसायिकता को ध्यान में रखते हुए लिखेगा, तो कहानी प्रभावित होगी। किताब इतनी रोमांचक होनी चाहिए कि पाठक एक बार उसे पढ़ना शुरू करने के बाद उसे अंत तक एक बार में ही पढ़ डाले। यह कहना है कृष्णा की, चाणक्याज चैंट और रोजाबेल लाइन लिखने वाले एमबीए ऑथर अश्विन सांघी का। अश्विन यहां ताज लिटरेचर फेस्टिवल में भाग लेने आए थे। देश में साहित्य के प्रति पाठकों के घटते रुझान पर उन्होंने कहा कि पहले घरों में बच्चों को दादी-नानी कहानियां सुनाती थीं। जिनमें रामायण, महाभारत के प्रसंग होते थे। आज संयुक्त परिवार खत्म होने से कहानियां सुनाने वाला कोई नहीं रहा। इतिहास और काल्पनिक मान्यताओं पर अब तक लिखने वाले अश्विन कहते हैं कि हमें अपनी पुरानी कहानियों का रीपैकेज कर युवाओं को जागृत करना होगा।

कहानी अच्छी हो तो पसंद आती है: सांघी

ताज साहित्य उत्सव नए लेखकों को मंच प्रदान कर रहा है। गुरुवार को कृष्ण कुंजी, द रोजाबेल लाइन, चाणक्याज चैंट जैसी चर्चित पुस्तकों के लेखक अश्विन सांघी भी उत्सव में शामिल हुए। उन्होंने कहा, कहानी अच्छी हो तो बिकती है। वह किसी वर्ग को ध्यान में रखकर या बेचने के हिसाब से कहानी नहीं लिखते। कहानी से जुड़े लोग खुद इसे ढूंढ लेते हैं। अंग्रेजी साहित्य की पुस्तकों के हिंदी अनुवाद पर अश्विन ने कहा कि बेशक इससे कहानी के मूल पर थोड़ा प्रभाव पड़ता है। उन्होंने हिंदी साहित्य के गिरते ग्राफ पर कहा कि लेखकों को ट्रेनिंग की जरूरत है। किसी भी लेखक को अपने प्रति सच्चा होना जरूरी है। किताब छपने के बाद बेहतर करने की गुंजाइश के सवाल पर अश्विन ने कहा कि कोई भी कहानी लिखने के बाद, वह जितनी बार पढ़ी जाती है उसमें बेहतर करने की गुंजाइश बनी रहती है। ऐसा ही किताब छपने के बाद भी होता है।